महिला सशक्तिकरण : साहित्य के संदर्भ में

ममता मग्गो कपूर

आज महिला राजनीति, कला, शिक्षा और साहित्य से लेकर कम्प्यूटर, प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष विज्ञान तक के क्षेत्र में अपनी सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर अपने 'सुपर वुमेन पावर' की अवधारणा को सार्थक कर रही है। वस्तुतः तीन अक्षर के इस 'महिला' शब्द को 'अबला' कह लें या फिर 'सुपर वुमेन पावर' उसका जीवन समाज में उपेक्षा और संघर्ष का प्रतिबिम्ब ही बना रहा है, इसी कारण दुनिया में महिला जीवन के उत्थान की आवश्यकता महसूस की गई और यहीं से 'महिला सशक्तिकरण' शब्द का प्रादुर्भाव हुआ।

महिला सशक्तिकरण का सामान्य अर्थ है घर–परिवार और समाज में महिला को उसकी नैसर्गिक क्षमता, स्वतन्त्रता और मुक्ति का बोध कराकर इतना सक्षम और सशक्त बना देना कि वह अपने जीवन में व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहभागी बन सके।

जीवन का यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि नर–नारी या स्त्री–पुरुष के संयोग से ही इस सृष्टि पर जोवन का क्रम चल रहा है, इसके बावजूद दुनिया में महिला वर्ग से दोयम दर्जे के व्यवहार और उसके शोषण का समृद्ध इतिहास है।

यदि हम भारतीय इतिहास का सिहांवलोकन करें तो देखेंगे कि प्राचीन भारत में नारी को बड़ा स्वतन्त्र एवं आदरपूर्ण स्थान प्राप्त था। वास्तव में नारी के बिना पुरुष अपूर्ण था। वह अर्द्धांगिनी कहलाती थी। आर्य सभ्यता में यज्ञ का विशेष महत्व है और यज्ञ में पुरुष के साथ यदि स्त्री न हो तो यज्ञ सम्पूर्ण नहीं हो सकता था। सीता के बनवास के पश्चात् जब भगवान राम ने अश्वमेघ यज्ञ किया तो उसकी विधि स्वीकार करते हुए सीता की स्वर्ण मूर्ति अपने साथ स्थापित की। पुरुष ने नारीत्व के साथ–साथ उसके सम्मान की गरिमा स्वीकार की।

आज जब हम महिला सशक्तिकरण की बात साहित्य के संदर्भ में करते हैं तो देखते हैं कि अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ, चाहे साहित्य में इसके योगदान की बात हो या फिर इसके वर्णन की, साहित्य का क्षेत्र भी इस महिमामयी के दिव्य आलोक से अछूता नहीं रहा है।

सर्वप्रथम हम साहित्य में हुए नारी वर्णन का अध्ययन करें तो हम देखते हैं कि धर्मशास्त्रों में कहा गया है –

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते

रमन्ते तत्र देवताः।'

अर्थात् "जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं।" इससे बड़ी पदवी आज तक किसी जाति ने नारी को नहीं दी। कवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में शकुन्तला का वर्णन इतिहास प्रसिद्ध है।

लेकिन बड़े दुःख का विषय है कि मध्य युग में नारी की पावन मूर्ति वासना का प्रतीक बन कर रह गई, जिस कारण तत्कालीन साहित्श्रय में उसे 'माया और विकार' कह कर अपमानित किया गया। कबीर ने तो यहाँ तक कह दिया–

'नारी की झाँई परत अन्धा होत भुजंग।'

और महात्मा तुलसीदास ने तो यहाँ तक कह दिया–

'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी,

ये सब ताड़न के अधिकारी।'

इसके पश्चात् जब हम रीतिकालीन साहित्य पर दृष्टि डालते हैं तो उसमें नारी का वर्णन पुरुष की विलास–वासना की तृप्ति के रूप में हुआ है।

तत्पश्चात् आधुनिक कालीन साहित्य का अध्ययन करने पर हमें सर्वप्रथम सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में नारी का वर्णन एक वीरांगना के रूप में अर्थात् 'झाँसी की रानी' का वर्णन प्राप्त होता है वे कहती हैं–

'चमक उठी सन् सतावन में, वह तलवार पुरानी थी।

बुन्देले हरबोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वी तो, झाँसी वाली रानी थी।'

इस प्रकार से अनेक ऐसी वीरांगनाएं जैसे देवी चौधरानी, कित्तूर की वीर नारी चेनम्मा, सुहासिनी गांगुली जैसी महान वीरांगनाओं का साहित्य में वर्णन प्राप्त होता है। जिसमें नारी के सशक्त रूप की झलक दिखाई देती है।

इसके अतिरिक्त कवियों का दृष्टिकोण भी बदला और उन्होंने नारी के यथार्थ रूप का चित्रण किया। 'मैथिलीशरण गुप्त' जी ने कहा–

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी

आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

इसी प्रकार से छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' जी ने अपनी भेंट चढ़ाते हुए कहा–

नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास, रजत नग पग तल में

पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर सम–तल में।

आज का कवि भी नारी को वासना का प्रतीक नहीं बल्कि नव–युग की प्रेरणा के रूप में देखने का इच्छुक है। रामेश्वर 'अंचल' की 'नारी' शीर्षक कविता में से कुछ उद्धरण देखिए–

चाहता मैं एक नूतन देश का संवाद तुमसे,

चाहता मैं अब न बीती प्रियतमा की याद तुमसे,

चाहता मैं आज जलती आग केवल आग तुमसे,

चाहता मैं अब न प्याली में सुरा सी झाग तुमसे।

अतः आज के युग के साहित्यकारों ने नारी के सशक्त रूप को पहचान लिया है और उसके जड़ और अबला रूप का परित्याग कर उसके एक वीर बालिका के रूप का वर्णन करना आरम्भ कर दिया है।

अब हम साहित्य के क्षेत्र में नारी द्वारा किए गए योगदान का अवलोकन करें तो पाते हैं कि वैदिक काल में गार्गी, अनुसूया एवं कात्यायनी जैसी अनेक विदुषी नारियों ने विद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त किया, जिनके

नाम आज भी इतिहास में सुरक्षित हैं। लेकिन हिन्दी साहित्य के इतिहास में सर्वप्रथम प्रसिद्ध नाम राजरानी 'मीरा' का है, जिस की 'प्रेम की पीर' के आगे पुरुष कवियों की रचनाएं भी फीकी पड़ जाती हैं।

भक्तिकाल के पश्चात् जब हम रीतिकाल में प्रवेश करते हैं, तो हमें दो मुसलमान कवयित्रियों के दर्शन होते हैं। जिन के नाम हैं 'ताज' और 'शेख', दोनों ने कृष्णभक्ति की है।

आधुनिक काल की कवयित्रियों में सुभद्रा कुमारी चौहान, तारा पाण्डे और महादेवी वर्मा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' शीर्षक रचना ने बड़ी ही लोकप्रियता प्राप्त की। उनकी अन्य रचनाओं में नारी ह्रदय की नवनीत–कोमलता विद्यमान है। इसके साथ श्रीमती तारा पाण्डे का स्वर इसके बिल्कुल विपरीत है। इनकी कविता में निराशा और वेदना का करुण चित्रण ही अधिक मिलता है। इनके पश्चात् महादेवी वर्मा उन कलाकारों में से हैं, जो युगों के बाद पैदा हुआ करते हैं। रहस्यवाद के क्षेत्र में उनकी टक्कर का दूसरा कवि नहीं हैं। वे कहती हैं–

मैं नीर भरी दुःख की बदली, विस्तृत नभ का कोई कोना।

मेरा न कभी अपना होना।

परिचय इतना इतिहास यही, उमड़ी कल थी मिट आज चली।

कविता के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि गद्य के क्षेत्र में भी महादेवी जी ने उत्कृष्ट रचनाएं भेंट की हैं।

इन रमणियों के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के विभिन्न अंगों जैसे उपन्यास, कहानी, निबन्धों तथा कथा साहित्य को समृद्ध बनाने वाली और भी अनेक महिलाएं हैं, जिनमें श्रीमती उषादेवी मित्रा, कमला देवी चौधरी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मन्नू भण्डारी, शिवानी, पूर्णिमा शर्मा और कृष्णा सोबती आदि के नाम काफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

अंत में मैं यही कहूंगी कि चाहे साहित्य के क्षेत्र में नारी के चित्रण की बात हो या फिर नारी के योगदान की। साहित्य में 'महिला सशक्तिकरण' केवल महिला वर्ग के जीवन उत्थान तक सीमित नहीं है बल्कि इसे मानव जीवन में खुशहाली का माध्यम कहा जा सकता है। इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह महिला वर्ग में सशक्तिकरण की जागरुकता की अलख जगाएः

"कर पदपात अब मिथ्या के मस्तक पर

सत्यान्वषण के पथ पर निकलो नारी,

तुम बहुत दिनों तक बनी रही दीन कुटिया का,

अब बनो क्रान्ति की ज्वाला की चिंगारी।"

असिस्टेंट प्रोफेसर

ममता मग्गो कपूर

गुरु नानक गर्ल्ज़ कॉलेज,

सन्तपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)।